लगान का आधुनिक सिद्धान्त
(MODERN THEORY OF RENT)

लगान का आधुनिक सिद्धान्त, **रिकार्डो** के लगान सिद्धान्त पर एक सुधार है। **रिकार्डो** के अनुसार भूमि प्रकृति का निःशुल्क उपहार है जिसमें सीमितता का गुण होता है जिसके कारण भूमि पर लगान प्राप्त होता है। आधुनिकअर्थशास्त्री **रिकार्डो** के इस कथन से पूर्ण सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार लगान भूमि के अतिरिक्त अन्य उत्पत्ति साधनों पर भी उपस्थित हो सकता है बशर्ते साधन की पूर्ति सापेक्षतः बेलोच हो। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार भूमि का प्रयोग केवल अनाज पैदा करने में ही नहीं किया जाता बल्कि **भूमि के वैकल्पिक प्रयोग** (Alternative Uses) **सम्भव हैं**। लगान के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या करने का श्रेय **प्रो. जे. एस. मिल** (J. S. Mill) को जाता है परन्तु इसका विकास **जेवन्स, परेटो, मार्शल** तथा श्रीमती जॉन रॉबिन्सन आदि ने किया। इन अर्थशास्त्रियों के अनुसार प्रत्येक उत्पत्ति का साधन (जिसकी पूर्ति भूमि की भांति सीमित होती है) आर्थिक लगान प्राप्त कर सकता है। आधुनिक विचारधारा के अनुसार लगान एक बचत है जो किसी भी साधन की इकाई को उसकी न्यूनतम पूर्ति कीमत (Minimum Supply Price) अर्थात् अवसर लागत के ऊपर प्राप्त होती है। अवसर लागत को हस्तान्तरण आय भी कहा जाता है। इस प्रकार **आधुनिक अर्थशास्त्रियों** के अनुसार **वास्तविक आय एवं हस्तान्तरण आय का अन्तर ही लगान है।**

संक्षेप में,

लगान = वास्तविक आय − अवसर लागत

अथवा, **लगान** = वास्तविक आय − हस्तान्तरण आय

Rent = Actual Earnings − Transfer Earnings

श्रीमती जॉन रॉबिन्सन के अनुसार, **"लगान के तथ्य का सार वह आधिक्य है जो किसी विशेष साधन को उस काम पर लगाये रखने के लिए कम मिलने वाली धनराशि के अतिरिक्त प्राप्त होता है।"**[1]

स्टोनियर एवं **हेग** के शब्दों में, **"लगान वह भुगतान है जो हस्तान्तरण आय से अधिक होता है।"**[2]

सिद्धान्त की व्याख्या (Explanation of the Theory)

वॉन वीजर (Von Wieser) नामक अर्थशास्त्री ने उत्पत्ति के साधनों का वर्गीकरण दो भागों में किया है :

(i) पूर्णतया विशिष्ट साधन (Perfectly Specific Factors),

(ii) पूर्णतया अविशिष्ट साधन (Perfectly Non-specific Factors)।

जो साधन केवल एक ही प्रयोग में लगाये जा सकते हैं अथवा जिनका कोई वैकल्पिक प्रयोग नहीं होता, उन्हें **पूर्णतया विशिष्ट साधन** कहा जाता है।

इसके विपरीत, अनेक वैकल्पिक प्रयोग वाले उत्पत्ति के साधनों को **पूर्णतया अविशिष्ट साधन** कहा जाता है। पूर्णतया अविशिष्ट साधन पूर्णतया गतिशील होते हैं।

वास्तविकता में उत्पत्ति का कोई भी साधन न तो पूर्णतः विशिष्ट होता है और न ही पूर्णतः अविशिष्ट। उत्पत्ति साधन में विशिष्टता एवं अविशिष्टता दोनों प्रकार के गुण विद्यमान होते हैं। कोई साधन किसी समय विशेष में विशिष्ट हो सकता है तथा वही साधन दूसरी परिस्थिति में अविशिष्ट हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक भूखण्ड जिसमें गेहूं की फसल खड़ी है, गेहूं के प्रयोग के लिए पूर्णतया विशिष्ट होगा क्योंकि उसका कोई वैकल्पिक प्रयोग उपलब्ध नहीं है, किन्तु गेहूं की फसल कट जाने के बाद वही भूखण्ड पूर्णतया अविशिष्ट बन जायेगा क्योंकि उस खाली भूखण्ड को अब अनेक वैकल्पिक प्रयोगों में प्रयुक्तकिया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

कैसे उत्पन्न होगा ? (How Economic Rent Arises ?)

अब प्रश्न यह उठता है कि लगान क्यों और कैसे उत्पन्न होता है ? आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार उत्पन्न होने का कारण साधन की सापेक्षिक सीमितता है अर्थात् जब साधन की पूर्ति मांग के सापेक्ष कम है तब लगान उत्पन्न होता है। भूमि के अतिरिक्त अन्य साधनों की पूर्ति भी मांग की तुलना में सीमित हो है जिसके कारण उन्हें न्यूनतम आय (अर्थात् पूर्ति कीमत) से अधिक मुद्रा की मात्रा आय के रूप में प्राप्त कती है। यही आधिक्य (Surplus) लगान है।

उत्पत्ति के साधनों को लगान तभी प्राप्त होगा जब उनकी पूर्ति पूर्णतया लोचदार न हो।

उत्पत्ति के साधनों की पूर्ति से सम्बन्धित तीन स्थितियां हो सकती हैं :

(1) **पूर्णतः लोचदार पूर्ति** (Perfectly Elastic Supply) अथवा **पूर्ण अविशिष्ट साधन** (Perfectly -specific Factor)—किसी साधन की मांग में परिवर्तन होने पर यदि उसकी पूर्ति में परिवर्तन हो जाय तब वह उत्पत्ति साधन सीमित नहीं होगा। इसके फलस्वरूप साधन की कीमत में भी परिवर्तन नहीं होगा। दूसरे शब्दों में, पूर्णतः लोचदार पूर्ति वाला साधन पूर्णतया अविशिष्ट होता है। ऐसी स्थिति में साधन की वास्तविक आय और हस्तान्तरण आय समान होगी अर्थात् कोई लगान प्राप्त नहीं होगा। चित्र 3 में पूर्णतया अविशिष्ट साधन की पूर्णतया लोचदार पूर्ति को दिखाया गया है। पूर्ति वक्र क्षैतिज रेखा के रूप में SS_1 है। ऐसे साधन को कोई लगान प्राप्त नहीं होता है क्योंकि साधन की कुल कीमत OSEQ के बराबर है तथा OSEQ ही हस्तान्तरण आय है। अतः लगान = वास्तविक आय - हस्तान्तरण आय, सूत्रानुसार, लगान शून्य के बराबर होगा क्योंकि ऐसी परिस्थिति में साधन को हस्तान्तरण आय के ऊपर कोई बचत प्राप्त नहीं होती।

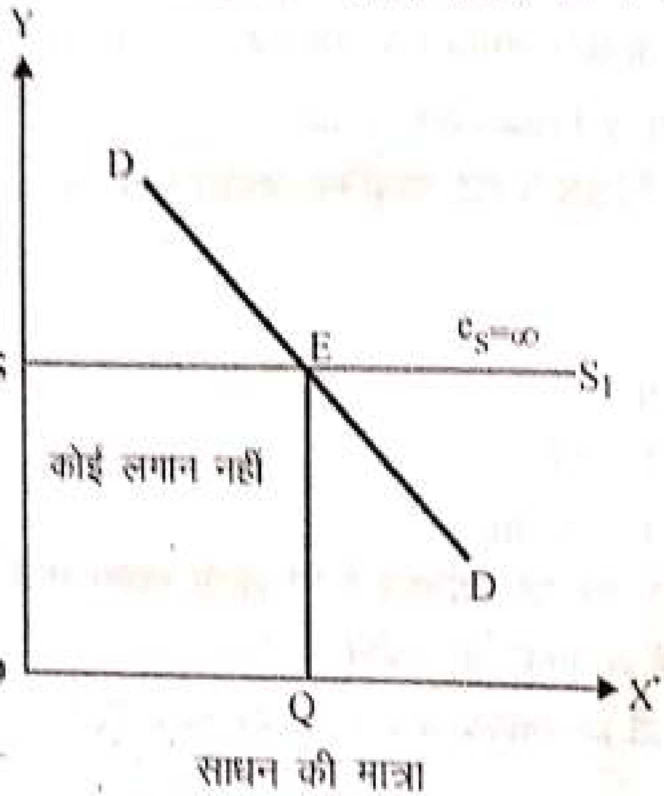

त्र 3. पूर्णतः लोचदार पूर्ति (पूर्ण अविशिष्ट साधन)

Scanned with CamScanner

साधन)

(2) **पूर्णतः बेलोचदार पूर्ति** (Perfectly Inel Supply) अथवा **पूर्ण विशिष्ट साधन** (Perfectly Specific Factor)—यदि साधन की मांग में परिवर्तन अथवा कमी) होने पर साधन की पूर्ति स्थिर रहती है तब ऐसी दशा में पूर्ण बेलोच पूर्ति वाला साधन पूर्ण वि हो जाता है। ऐसी स्थिति में हस्तान्तरण आय शून्य (Zero) होगी तथा साधन की सम्पूर्ण वास्तविक आय ही होगी। ऐसी पूर्ण बेलोच पूर्ति वाले साधन की मांग बढ़ने पर उस साधन की वास्तविक आय बढ़ जाती है अर्थात् लगान की मात्रा बढ़ जाती है। दूसरे शब्दों में, **पूर्ण बेलोच पूर्ति वाले साधन की समस्त आय लगान होती है।**

चित्र 4 में इस स्थिति को दिखाया गया है। *SS* रेखा साधन की पूर्णतः बेलोच पूर्ति को बतलाती है। DD मांग रेखा को प्रदर्शित करती है। साधन की प्रति इकाई कीमत OP (=ES) होगी तथा सम्पूर्ण वास्तविक आय OPES के बराबर होगी। इस स्थिति में साधन की हस्तान्तरण आय शून्य होगी क्योंकि साधन की गतिशीलता पूर्णतः अनुपस्थित होने के कारण साधन पूर्ण विशिष्ट बन जाता है। ऐसी दशा में, लगान = वास्तविक आय –हस्तान्तरण आय, सूत्रानुसार सम्पूर्ण वास्तविक आय OPES लगान के बराबर होगी। दूसरे शब्दों में, पूर्ण बेलोच पूर्ति वाले साधन की समस्त आय लगान होती है।

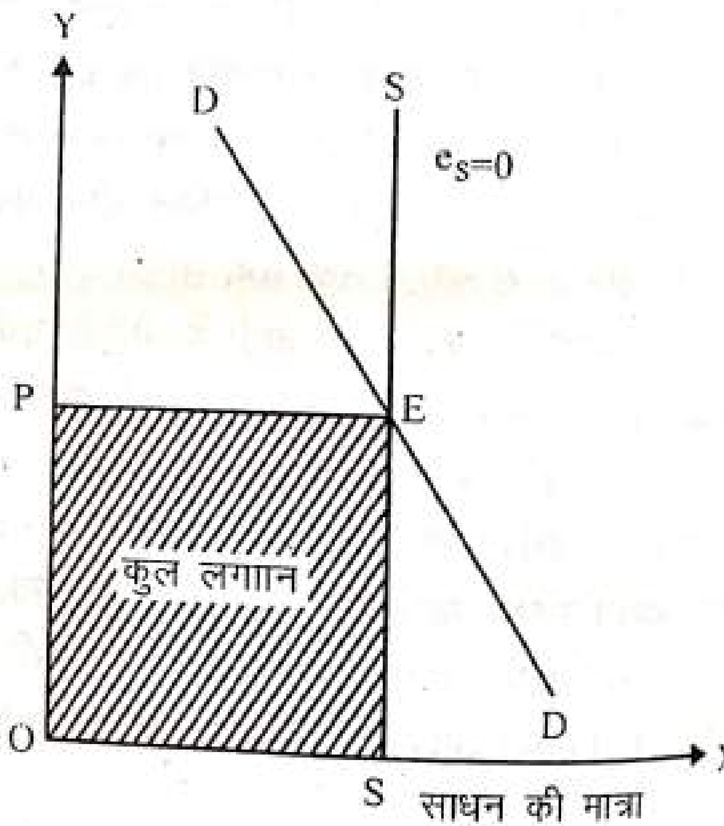

चित्र 4. पूर्णतः बेलोचदार पूर्ति (पूर्ण विशिष्ट साधन
सम्पूर्ण वास्तविक आय= लगान
हस्तान्तरण आय शून्य

Scanned with CamScanner

(3) **पूर्ण लोच से कम पूर्ति** (Less than Perfectly Elastic Supply) अथवा **आंशिक विशिष्ट तथा आंशिक अविशिष्ट साधन** (Partial Specific and Partial Non-specific Factor)—जब किसी साधन की मांग बढ़ने पर उसकी पूर्ति उस अनुपात में न बढ़कर कम अनुपात में बढ़ती है तब ऐसी स्थिति में साधन की पूर्ति की लोच पूर्ण लोच से कम होने के कारण वह साधन आंशिक विशिष्ट तथा आंशिक अविशिष्ट बन जाता है। ऐसी स्थिति में साधन की वास्तविक आय उसकी हस्तान्तरण आय से अधिक होगी तथा वास्तविक आय एवं हस्तान्तरण आय का अन्तर ही लगान होगा। साधन जिस सीमा तक दूसरे प्रयोग में मांगा जाता है उस सीमा तक वह अविशिष्ट (Non-specific) है तथा शेष अंश में वह विशिष्ट हो जाता है। उसकी यही विशिष्टता लगान उपस्थित करती है। दूसरे शब्दों में, **'लगान विशिष्टता का पुरस्कार है।'**

चित्र 5 में पूर्ण लोच से कम पूर्ति वाले साधन के लिए लगान की व्याख्या की गयी है। OS साधन की वह न्यूनतम कीमत है जो साधन को क्रियाशील करने के लिए अवश्य मिलनी चाहिए। OS से कम कीमत पर साधन क्रियाशील नहीं होगा। चित्र से स्पष्ट है कि साधन की क्रमश: OQ_1, OQ_2, OQ_3 तथा OQ मात्रा को प्रयोग में लाने के लिए साधन को क्रमश: OP_1, OP_2, OP_3 तथा OP कीमत अवश्य मिलनी चाहिए। इस प्रकार साधन पूर्ति रेखा SS_1 के विभिन्न बिन्दु K, R, T तथा E साधन की विभिन्न मात्राओं (क्रमश: OQ_1, OQ_2, OQ_3 तथा OQ) के लिए उन न्यूनतम कीमतों को बताते हैं जिन पर उस साधन की तत्सम्बन्धित मात्राएं (Corresponding Quantities) क्रियाशील होती हैं। चित्र में छायादार भाग (PSE क्षेत्रफल) लगान को बताता है।

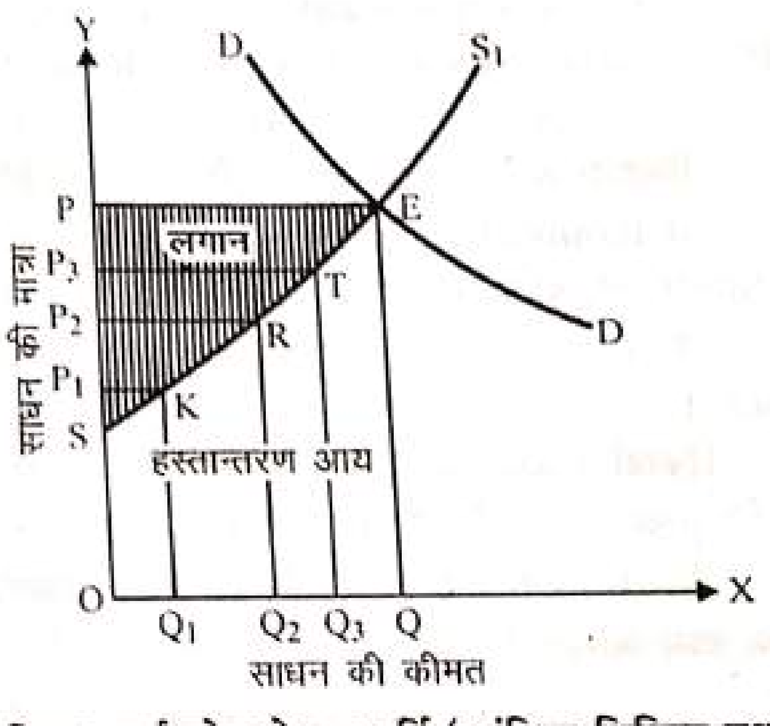

चित्र 5. पूर्ण लोच से कम पूर्ति (आंशिक विशिष्ट तथा आंशिक अविशिष्ट साधन)

उदाहरण के लिए,

साधन की OQ मात्रा के लिए,

हस्तान्तरण आय = OSEQ क्षेत्र

वास्तविक आय = OPEQ क्षेत्र

अत: लगान = क्षेत्र OPEQ –क्षेत्र OSEQ

= क्षेत्र SPE

Scanned with CamScanner

इस प्रकार उत्पत्ति का कोई भी साधन लगान प्राप्त कर सकता है यदि उस साधन की आय उसकी हस्तान्तरण आय से अधिक हो। दूसरे शब्दों में, लगान का आधुनिक सिद्धान्त एक वास्तविक सिद्धान्त है जो उत्पत्ति के प्रत्येक साधन पर क्रियान्वित होता है।

संक्षेप में, लगान के आधुनिक सिद्धान्त को निम्नलिखित बिन्दुओं पर स्पष्ट किया जा सकता है :

(1) जब उत्पत्ति के साधन की पूर्ति पूर्ण बेलोच होती है तब उसकी सम्पूर्ण आय आर्थिक लगान होती है।

(2) जब उत्पत्ति के साधन की पूर्ति पूर्ण लोचदार होती है तब उसकी सम्पूर्ण आय, हस्तान्तरण आय के बराबर हो जाती है। इस प्रकार इस दशा में आर्थिक लगान का कोई तत्व उपस्थित नहीं होता।

(3) जब उत्पत्ति के साधन की पूर्ति पूर्ण लोचदार से कम हो, तब उसकी आय में आर्थिक लगान सम्मिलित रहता है। पूर्ति में बेलोच का अंश जितना अधिक होगा, उतना ही आर्थिक लगान अधिक होगा।

(4) आर्थिक लगान का विचार केवल भूमि से ही सम्बन्धित न होकर उत्पत्ति के प्रत्येक साधन से सम्बन्धित है। दूसरे शब्दों में, लगान का सिद्धान्त एक सामान्य सिद्धान्त है।

Scanned with CamScanner